युवा इटली

मक्सिम गोर्की

मखमली कपड़े पहने हुए रात दबे पांव मैदान से नगर में प्रवेश कर रही है। नगर सुनहरी, जगमगाती बत्तियों से उसका स्वागत कर रहा है। दो नारियां और एक युवक भी मानो रात का अभिनन्दन करते हुए मैदान में चले जा रहे हैं। उनके पीछे-पीछे दिन भर की दौड़-धूप से थका-हारा हुआ जिन्दगी का धीमा-धीमा शोर सुनायी दे रहा है।

रोम के अनेक कबीलों के गुलामों द्वारा बनायी गयी प्राचीन सड़क की काली-काली टाइलों पर तीन व्यक्तियों के पैरों की धीमी-धीमी आहट सुनायी दे रही है। प्यारी खामोशी में एक नारी की स्नेहमयी और दृढ़ आवाज सुनाई देती है :

"लोगों के साथ तुम्हें कड़ाई से पेश नहीं आना चाहिये..."

"क्या तुमने मुझमें कभी कोई ऐसी बात देखी है, मां?" युवक ने पूछा।

"तुम बहुत ही जोश से बहस करते हो..."

"अपनी सचाई को भी बहुत जोश से प्यार करता हूं..."

युवक के बायीं ओर पत्थरों पर खड़ाऊंओं को घसीटती और सिर को ऊपर उठाकर आकाश को ऐसे ताकती हुई, मानो अंधी हो, एक युवती चल रही है। आकाश में सन्ध्या का बड़ा-सा सितारा चमक रहा है, उसके नीचे डूबते सूरज की हल्की-सी लाल धारी है और इस लाली की पृष्ठभूमि में चिनार के दो पेड़ बिना जली मशालों जैसे लग रहे हैं।

"समाजवादियों को अक्सर जेलों में बन्द

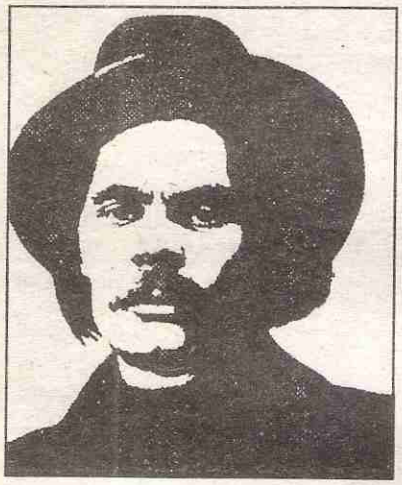

कर दिया जाता है" मां ने आह भरकर कहा।

"हमेशा ऐसा ही नहीं होगा। आखिर इससे कोई फायदा तो होता नहीं..." बेटे ने शान्तिपूर्वक जवाब दिया।

"सो तो ठीक है, लेकिन फिलहाल..."

"न तो ऐसी ताकत आज है और न कभी होगी जो दुनिया के जवान दिल को कुलच सके..."

"गीत के लिए ये शब्द बड़े सुन्दर हैं, मेरे बेटे..."

"लाखों-करोड़ों कण्ठ अब इस गीत को गाते हैं और पूरी दुनिया ही अधिकाधिक ध्यान से इसे सुन रही है... जरा याद करके बताओ—क्या तुम भी पहले कभी इतने धीरज और प्यार से मेरी या पाओलो की बातें सुनती थीं?"

"यह ठीक है। लेकिन...हड़ताल ने तुम्हें अपना जन्म-नगर छोड़ने को मजबूर कर दिया न..."

"दो के लिए वह काफी बड़ा नहीं। अच्छा है कि पाओलो ही यहां रहे। लेकिन हड़ताल तो हमने जीत ली..."

"जीत ली," युवती ने जोर देकर कहा, "तुमने और पाओलो ने..."

अपनी बात अधूरी छोड़कर वह धीरे से हंस दी और फिर क्षण भर को तीनों चुपचाप चलते रहे। अंधेरे में एक टीला-सा उभरकर सामने आ गया। वास्तव में वह किसी इमारत के खण्डहरों का ढेर था। उसके ऊपर सफेदे के पेड़ की पतली-पतली शाखायें विचारमग्न-सी लटकी थीं। ये तीनों जब पेड़ के करीब पहुंचे तो उसकी शाखायें मानो धीरे-से सिहरीं।

"लो— वह रहा पाओलो," युवती ने कहा।

लम्बे कद की काली-सी आकृति खण्डहरों में से निकलकर सड़के के बीच आ खड़ी हुई।

"मन की आंखों से देख लिया था क्या?" युवक ने हंसते हुए पूछा।

सामने से भारी आवाज गूंजी :

"तो जा रहे हो?"

"हां। और ये रहीं—मेरी मां तथा बहन जिनकी तुम्हें देखभाल करनी होगी। तुम लोग अब मेरे साथ आगे नहीं चलो, इसकी जरूरत नहीं है। रोम तक पहुंचने में मुझे सिर्फ पांच घण्टे लगेंगे और मैं जान-बूझकर पैदल जा रहा हूं, ताकि रास्ते में कुछ सोच-विचार कर सकूं..."

सभी रुक गये...लम्बे कदवाले ने अपना

टोप उतार लिया और तनिक आर्द्र आवाज में कहा :

"मां और बहन के बारे में तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं—इन्हें कोई कष्ट नहीं होगा!"

"मैं जानता हूं। विदा, मां!"

मां धीमे से सिसकी, कराही, इसके बाद तीन जोरदार चुम्बन और मर्दाना आवाज में ये शब्द सुनायी दिये :

"घर जाकर चैन से आराम करो। इन तूफानी दिनों में काफी चिन्ता कर चुकीं! जाओ, परेशान होने की कोई बात नही! पाओलो भी तो तुम्हारे लिये मेरे जैसा ही बेटा है! तो प्यारी बहन, अब तुमसे भी..."

फिर से चुम्बन और पत्थरों पर पैरों की खरखरी आहट सुनायी दी। रात की सधी-बधी नीरवता सारी ध्वनियों को दर्पण की भांति प्रतिबिम्बित कर रही थी।

अंधेरे की चादर में लिपटी हुई चार आकृतियां एक-दूसरी में सिमटकर एक बड़ा शरीर बन गयीं और देर तक अलग नहीं हो पायीं। आखिर चुपचाप अलग हुई—तीन आकृतियां धीरे-धीरे नगर की बत्तियों की ओर चल दीं और एक आकृति तेजी से कदम उठाती हुई आगे, पश्चिम की ओर बढ़ चली जहां सन्ध्या की लाली लुप्त हो चुकी थी और नीले आकाश में अनेकानेक उज्ज्वल सितारे जगमगा उठे थे।

दूरी से आशा पैदा करती हुई यह आवाज आयी :

"विदा! उदास नहीं होना, जल्द ही मिलेंगे..."

लड़की के खड़ाऊं ठक-ठक की आवाज करते हुए बज रहे थे, खरखरी आवाज वाले ने तसल्ली देते हुए ये शब्द कहे :

"उसके साथ सब कुछ ठीक-ठाक रहेगा, दोन्ना फिलोमेना। मेरी इस बात पर आप वैसे ही विश्वास कर सकती हैं जैसे अपनी मदोन्ना की कृपा पर। उसके पास अच्छा दिमाग और मजबूत दिल है, वह खुद प्यार करना जानता है और आसानी से दूसरों को अपने से प्यार करने को विवश कर सकता है... और लोगों के प्रति प्यार ही तो वे पंख हैं जो आदमी को सबसे अधिक ऊंचाई पर पहुंचा देते हैं..."

नगर अंधेरे में अपनी छोटी-छोटी और मन्द रोशनीवाली बत्तियों को बढ़ाता जा रहा था और लम्बे कद के व्यक्ति के शब्द भी रोशनियों की तरह ही चमकते थे।

"जब किसी व्यक्ति के हृदय में दुनिया को एकजुट करनेवाले शब्द होते हैं तो उसे हर जगह उसका ऊंचा मूल्य आंकनेवाले लोग भी मिल जाते हैं—हर जगह ही!"

नगर की रक्षा-दीवार से सटा हुआ एक छोटा-सा सफेद भटियारखाना अपने रोशन दरवाजे की चौकोर आंख से लोगों को मानो अपनी ओर खींच रहा था। दरवाजे के निकट ही छोटी-छोटी तीन मेजों पर काली-काली आकृतियां हो-हल्ला मचा रही थीं, गिटार के तारों के दर्दभरे स्वर निकल रहे थे, मैंडोलिन की कांपती-सिहरती ध्वनियां गूंज रही थीं।

ये तीनों प्राणी जब दरवाजे के निकट पहुंचे तो संगीत बन्द हो गया, आवाजें धीमी हो गयीं और उनमें से कुछ लोग उठकर खड़े हो गये...

"नमस्ते, साथियो!" लम्बे कदवाले ने कहा।

और कोई दसेक आवाजों ने खुशी तथा हार्दिकता से जवाब दिया :

"नमस्ते, साथी पाओलो! हमारे पास आये हैं? शराब का एक एकाध जाम?"

"नहीं... धन्यवाद!"

मां ने गहरी सांस लेकर कहा :

"हमारे सभी लोग तुम्हें भी बेहद प्यार करते हैं..."

"हमारे सभी लोग, यही कहा है न आपने, दोन्ना फिलोमेना?"

"ऐ, मेरी बात की हंसी नहीं उड़ाओ... अपनी जनता से मैं अपरिचित-अजनबी नहीं हूं..तुमको और उसको सभी प्यार करते हैं..."

लम्बे नौजवान ने युवती का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा :

"सभी, और एक यह भी... ठीक है न?"

"हां," युवती ने धीमे से कहा। "बेशक ठीक है..."

मां तनिक हंस दी :

"ओह, मेरे बच्चो!... जब तुम्हारी बातें सुनती हूं और तुम लोगों को देखती हूं तो यह यकीन हो जाता है कि तुम लोगों की जिन्दगी हमसे बेहतर होगी..."

और तीनों पास ही में नगर की सड़क पर आंखों से ओझल हो गये जो पुरानी और घिसी-फटी पोशाक की आस्तीन की तरह तंग और खस्ताहाल थी...

●